विज्ञान की शान ये वैज्ञानिक महान

विलियम डी. वेस्ट

नीरद (कार्टूनिस्ट) साकेत विहार, अनीसाबाद पटना-800002 (बिहार)

चित्र/आलेख
नीरद/शैलनीरद

विलियम डी. वेस्ट को एक सुप्रसिद्ध भू-वैज्ञानिक के रूप में जाना जाता है। वेस्ट हमारे लिए एक प्रसिद्ध भू-वैज्ञानिक होने के नाते ही नहीं, बल्कि इसलिए भी जाने जाते रहे हैं कि उन्होंने विदेशी होते हुए भी भारत का नाम रौशन किया।

उनका जन्म इंग्लैण्ड के बर्नमाउथ कस्बे में 27 फरवरी, 1901 को हुआ। उनके पिता ए. जे. वेस्ट रेल परियोजनाओं से जुड़े थे

वेस्ट का बचपन ब्रितानी बोर्निया के जेसल्टन नगर में बीता। वह अधिकांश समय यहीं रहे। वहां केंटरबरी का किंग्स स्कूल था, जहां बालक वेस्ट ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा अर्जित की। कई आदतों को सीखने के साथ-साथ बालक वेस्ट ने वहां दो महत्वपूर्ण बातें जीवन के अध्याय से जोड़ लीं।

1912 से 1920 के दौरान यानी वहां पढ़ाई के दरम्यान जो दो अच्छी व महत्वपूर्ण बातें उन्होंने जीवन से जोड़ लीं, उनमें एक थी फुटबॉल खेलना व दूसरी थी, खनिजों के प्रति जबर्दस्त लगाव। इस संदर्भ में पिता से भी उन्हें सहयोग मिला। चूंकि उनके पिताजी रेल परियोजना अधिकारी थे, लिहाजा खुदाई में मिलने वाले पत्थर व मिट्टियां वेस्ट के लिए ले आया करते थे।

यही सब कारण थे कि बालक वेस्ट का खनिजों के प्रति आकर्षण बढ़ता गया। भू-विज्ञान के प्रति उत्पन्न उनकी जिज्ञासा को उनके पिता शांत करते। कार्य के प्रति लगाव व समर्पण ने फुटबॉल और भू-विज्ञान में वेस्ट को विशिष्टता दिला दी।

उनके स्कूल की जो फुटबॉल टीम थी, उसके उप-कप्तान बनने में वेस्ट ने सफलता तो पाई ही, साथ ही कैंब्रिज के सेंट जॉन कॉलेज के छात्र के रूप में 1922 में भू-विज्ञान और खनिज विज्ञान के 'विंचस्टेड सम्मान' से भी अलंकृत हुए।

यह सम्मान वेस्ट को सुविख्यात भू-विज्ञानी अल्फ्रेड हारकर और हेनरी वुड के साथ जुड़ने में मददगार साबित हुआ। 1923 में उन्होंने प्रथम श्रेणी में डिग्री हासिल की और हार्कनेस छात्रवृति पाने में सफलता प्राप्त की।

इंडियन जियोलॉजिकल सर्वे की एक परियोजना थी, जिसमें काम करने की लालसा उन्हें भारत खींच लाई। हालांकि दृढ़ निश्चयी विलियम को अपने इस फैसले पर परिवार वालों के घोर विरोध का सामना करना पड़ा था। लेकिन निर्णय नहीं बदला विलियम ने।

अलबत्ता उनके दृढ़ निश्चय के पीछे एक जबरदस्त वजह थी। दरअसल, उन दिनों 'जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया' के उक्त प्रोजेक्ट से विश्व के तत्कालीन सुप्रसिद्ध भू-वैज्ञानिक एल. एल. फरमोर भी जुड़े थे और विलियम चाहते थे कि उनके हाथ से फरमोर के साथ काम करने का सुअवसर न छूटे।

भारत को अपनी कार्यस्थली बनाने के बाद उन्होंने भारतीय भू-विज्ञान सर्वेक्षण में उल्लेखनीय योगदान दिए। सबसे पहले मध्य प्रांत के सॉसर तहसील की शैलों पर काम करते हुए मैंगनीज खनिज की खोज की।

उसके बाद मैंगनीज की खोज के लिए छिंदवाड़ा, नागपुर, सिवनी, बालाघाट एवं चंदरपुर आदि क्षेत्रों में काम करके अपनी महती भूमिका निभाई। इसके बाद भारत विश्व में सर्वाधिक मैंगनीज प्राप्ति का देश बन गया।

शीघ्र ही भारत में मैंगनीज उत्पादन के खदानों की खोज होती गई, जो दुनिया की अन्य खदानों के मुकाबले स्तरीय थीं। साथ-साथ विलियम भी खदानों के बहाने अपनी बुलंदियों के मार्ग प्रशस्त करते रहे।

कहा जाता है कि भू-विज्ञान के प्रति विलियम की ऐसी दीवानगी थी कि अपने विवाह के लिए भी समय नहीं निकाल सके। अलबता, इससे उनके कार्यों व गतिविधियों पर कोई फर्क नहीं पड़ा। 1928-29 में डा. कोलेट के निमंत्रण पर आल्प्स पर्वत क्षेत्र में काम करने गए। यही वह दौर था, जब उन्होंने 'स्कॉटलैंड हाइलैंड्स' का निरीक्षण किया।

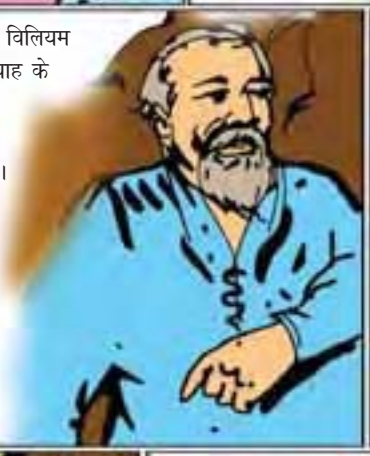

विलियम ने 1923-30 में शिमला की पहाड़ियों के अध्ययन से 'शाली खिड़की' और 'शिमला नैपे' की अवधारणा प्रस्तुत की। 1930 में उनका 'डेक्कन ट्रेप' के 48 लावास्तर पर लिखा शोध-पत्र विश्व प्रसिद्ध हुआ। वह शोध-पत्र अहमदाबाद व काठियावाड़ क्षेत्रों में फैले 'डेक्कन ट्रेप' आग्नेय शैलों के अध्ययन पर केंद्रित था। 1931 में बलूचिस्तान के भूकंप, फिर 1938 में क्वेटा के भूकंप के अध्ययनों पर लिखा शोध पत्र 'भारतीय भूकंप' खूब प्रसिद्ध हुआ।

1940 में अफगानिस्तान के हिंदूकुश' क्षेत्र में कोयले की खोज के दौरान विलियम ने 'दारा-ए-सुल' क्षेत्र में कोयले का विशाल भंडार खोज निकाला। फलस्वरूप विलियम 'सितारा-ए-अफगानिस्तान' पुरस्कार से नवाजे गए। उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण पदों को सुशोभित किया।

वह 'भारत भू-विज्ञान सर्वेक्षण' के उप-निदेशक (1942) तथा बाद में महानिदेशक (1945-51) बने। वहां से अवकाश ग्रहण करने के बाद सागर विश्वविद्यालय में भू-विज्ञान के विभागाध्यक्ष (1955) तथा कुलपति (1971) नियुक्त हुए। विलियम 'भारतीय राष्ट्रीय संस्थान के संस्थापकों में से एक थे।

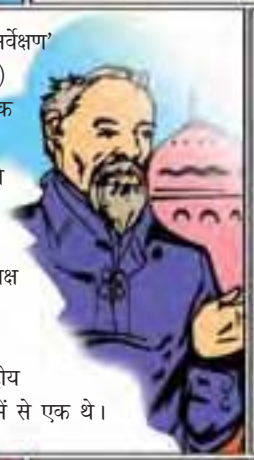

कालांतर में 1932 से 1938 तक संस्थान के महासचिव भी रहे। 1949 में उन्हें 'भारतीय खान भू वैज्ञानिक एवं धातु कर्म संस्थान' का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। 1971 में वह भारतीय विज्ञान संगठन' के अध्यक्ष मनोनीत किए गए।

1947 में उन्हें लंदन की जियोलॉजिकल सोसाइटी' के 'लॉयल मेडल' से अलंकृत किया गया। विलियम 1959 में ब्रिटेन की महारानी के 'सी.आई.आई. अलंकरण, 'कोलकाता एशियाटिक सोसायटी' के 'बोस मेमोरियल मेडल, 1991 में ब्रिटेन की महारानी के 'एम. ओ. बी. आई.' उपाधि से अलंकृत हुए।

सागर विश्वविद्यालय के सबसे लोकप्रिय कुलपति, विद्यार्थियों के बीच 'बब्बा' के नाम से मशहूर, परीक्षा के दिन एक-एक परीक्षार्थी को 'बेस्ट ऑफ लक' कहने वाले तथा स्वयं को भारतीय कहलाकर गर्व करने वाले महान भू-वैज्ञानिक डा. विलियम डी. वेस्ट का निधन 23 जुलाई, 1994 को भोपाल के एक साधारण से अस्पताल में हो गया। एक अति असाधारण व्यक्तित्व के स्वामी व विज्ञान के प्रति समर्पित वेस्ट सदा 'वेस्ट' रहेंगे व याद किए जाते रहेंगे।

सी.एस.आई.आर. - राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान, डॉ. के. एस. कृष्णन् मार्ग, नई दिल्ली-110012 के लिए श्रीमती दीक्षा बिष्ट द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा इंटरनेशनल प्रिन्ट-ओ-पैक लिमिटेड, सी-4 से सी-11, होज़री कॉम्पलैक्स, फेज़-II एक्सटेंशन, नोएडा-201305 (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।